पाठ 4. मुर्गा बोला

पाठ का परिचय

मुर्गे ने सुबह-सुबह बाँग दी। वह कुकड़ूँ- कूँ बोला। सोए हुए बच्चे को यह आवाज़ अच्छी नहीं लगी। वह मुर्गे से बोला कि तुम इतनी जल्दी बाँग क्यों दे रहे हो। मैं अभी-अभी तो सोया था। मीठे सपनों में खो गया था। अभी तो सूरज दादा ने भी अपना जाल नहीं फैलाया है। न जाने तुम्हें इतनी जल्दी क्यों पड़ी है। उसी समय मुर्गा बोला कि तुम्हें मुझसे ऐसी क्या नाराज़गी है। सुबह की ताज़ी हवा है। आलस को छोड़ो और इस ताज़ी हवा में टहलने के लिए आ जाओ। जल्दी सोने और जल्दी उठने का नियम बहुत ही अच्छा है। जो भी इसका पालन करता है वह अच्छा बच्चा कहलाता है।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

जो व्यक्ति नियम से जीता है वह सदैव स्वस्थ रहता है। वह जीवन में तरक्की करता है। इसलिए रात को जल्दी सोकर सुबह जल्दी उठना चाहिए।

पाठ का वाचन

कक्षा में दो-तीन बार कविता पढ़ें। बच्चे आपके साथ दो बार कविता पढ़ें। अब बच्चे स्वयं उच्च स्वर में गाकर पढ़ें। बच्चों को हाव-भाव के साथ कविता को कक्षा में सुनाने को कहें।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से निम्न प्रश्नों पर चर्चा करें –

- तुम कितने बजे उठते हो?
- सुबह सैर करने कौन-कौन जाता है?
- व्यायाम करना किस-किस को अच्छा लगता है?
- कौन-कौन से व्यायाम करना अच्छा लगता है?
- तुम कौन-कौन से व्यायाम करते हो?
- क्या तुम शाम को सैर करने जाते हो?
- नियम से चलना किस-किस बच्चे को अच्छा लगता है और किस-किस को नहीं?